Q→ लॉक के द्रव्य विषयक सिद्धांत की व्याख्या करें ?

→ अनुभववादी लॉक कहता है कि मुझे द्रव्य का साक्षात अनुभव नहीं होता बल्कि केवल गुणों का अनुभव होता है।

लेकिन अनुभववादी लॉक बाद में बुद्धि के आधार पर कल्पना (अनुमान) करने पर मजबूर हो जाता है और अपने अनुभव को एक ओर रखकर कहता है कि यदि द्रव्य नहीं है तो गुण कहाँ रहते हैं? इसलिए गुणों का आधार अवश्य ही होना चाहिए तथा बुद्धि के आधार पर अनुमान करके कहता है कि 'द्रव्य गुणों का परिकल्पित आधार है।' लॉक का यह मत 'प्रतिनिधिमूलक वस्तुवाद' कहलाता है। इस मत की तुलना बौद्ध दर्शन के सौत्रान्तिक सम्प्रदाय के बाह्य अनुमेयवाद से की जा सकती है, क्योंकि यह सम्प्रदाय भी बाह्य वस्तु की सत्ता का ज्ञान अनुमान के आधार पर करता है।

द्रव्य के सम्बन्ध में लॉक का कथन है कि "द्रव्य की सत्ता अवश्य है, परन्तु मैं नहीं जानता कि वह क्या है?" लॉक के

अनुसार, यद्यपि द्रव्य का प्रत्यक्ष नहीं होता फिर भी उसके अस्तित्व में विश्वास आवश्यक है, क्योंकि इन्द्रिय प्रत्यक्ष के आधार पर ही बाह्य वस्तुओं की सत्ता सिद्ध होती है।

अतः स्पष्ट है कि अनुभववादी लॉक पहले अनुभव के आधार पर द्रव्य के अस्तित्व स्वीकार करने में असंगत हो जाता है। इसके पश्चात् द्रव्य का अस्तित्व स्वीकार करने के लिए उसे बुद्धिवादी बनना पड़ता है। यह उसकी बहुत बड़ी दुर्देशा है, क्योंकि अनुभववादी को कोई भी ऐसा पदार्थ स्वीकार नहीं करना चाहिए जिसका अनुभव न हो। यदि लॉक के गुणों के आधार का अनुभव नहीं होता, तो फिर यह कहना कि 'द्रव्य गुणों का आधार है' अनुभववाद के साथ संगत नहीं असंगत है।

अतः हम कहेंगे कि द्रव्य का अस्तित्व स्वीकार करने में अनुभववादी लॉक असंगत हो गया, क्योंकि यह स्वयं कहता है कि मुझे आधार का कोई अनुभव नहीं होता। अतः उपरोक्त व्याख्या में लॉक